ज्ञान तत्व अंक 149

(क) लेख अपनो से अपनी बात ।

(ख) ज्ञान यज्ञ विधी।

(ग) ज्ञान यज्ञ प्रगति समीक्षा ।

(घ) ज्ञान यज्ञ मीमांसा ।

(च) श्री महावीर सिंह रिटायर्ड पुलिस उप अधीक्षक, नोएडा, उ0प्र0। का न्यायाधीश कमतादास जी के पुस्तक **''हमारा संविधान हमारी विशेष बाधा''** पर प्रश्न और मेरा उत्तर ।

(छ) श्री गोपीराम साक्षी, तिला रोड सागर मध्य प्रदेश का प्रश्न और मेरा विस्तृत उत्तर ।

(ज) श्री भंवर लाल झंवर, 63 रावजी का हाता, उदयपुर, राजस्थान। और मेरा उत्तर ।

(क) अपनो से अपनी बात

मै दो हजार पांच के मध्य में इस घोषणा के साथ दिल्ली आया था कि अगले चार पांच वर्षो में भारत की राजनैतिक व्यवस्था लोक नियंत्रित हो जायगी और इसका प्रारम्भ दो सुत्रीय संविधान संशोधन से होगा। मैंने एक वर्ष बाद समीक्षा की तो प्रगति को असंतोषप्रद पाया। मैंने उन्नीस अक्टूबर दो हजार छः को वानप्रस्थ घोषित करके कारणों पर विचार मंथन शुरू किया। क्या यह कार्य असंभव है?क्या मेरे प्रयत्न कम हुए?क्या समाज इसके लिए तैयार नहीं? क्या हमारे मार्ग में कमी है? इन प्रश्नों का उत्तर खोजना आवश्यक था और मैंने वानप्रास्त के बाद का एक वर्ष का समय इन प्रयत्नों के उत्तर खोजने में ही लगाया।

पहले तीन प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट था।चौथे प्रश्न पर भी कोई भ्रम नही था। दो सूत्रीय संविधान सशोधन ही एकमात्र मार्ग है। फिर असफलता या आंशिक सफलता क्यों? एक वर्ष तक गंभीर मंथन के बाद यह समझ में आया कि पिछले समय में रामानुजगंज में मिली सफलता का आधार ज्ञान यज्ञ था जिसे दिल्ली आकर मैं भूल गया। ज्ञान यज्ञ के प्रभाव से मेरी अपनी, परिवार की, मित्रों की या शहर की स्थिति में जो परिवर्तन दिखा उसे अपना प्रभाव मानने की भूल हुई है।मैंने अनुभव किया कि मैं जीवन में आसानी से उठा नहीं

जाता था किन्तु दिल्ली आने के बाद बड़ी आसानी से पेशेवर समाज सुधारकों ने मुझसे करीब अस्सी हजार रूपया ठग लिया। और भी कुछ घटनाएँ हुई और तब मुझ समझ में आया कि ज्ञान यज्ञ को छोड़ना मेरे जीवन की बड़ी भूल रही तथा भविष्य में ज्ञान यज्ञ से ही शुरूआत करनी पड़ेगी। दो हजार सात के अन्त तक भूल समझ में आ चुकी थी। उन्तीस तीस दिसम्बर को सेवाग्राम सम्मेलन के समापन के बाद सभी प्रमुख साथियों के बीच चर्चा हुई और ज्ञान यज्ञ फिर से शुरू करना तय हुआ। ज्ञान यज्ञ विधि इसी अंक में पृथक से अंकित है। पिछले बावन वर्षों से लगातार ज्ञान यज्ञ करते हुए दिल्ली में छूटने का अफसोस रहा, किन्तु प्रसन्नता यह रही कि भूल समझ में आ गई। अब स्वयं ज्ञान यज्ञ शुरू कर दिया है। साथ ही ज्ञान यज्ञ परिवार बनाने का भी निश्चय हुआ है अर्थात् प्रयत्न किया जाए कि अधिक से अधिक लोग ज्ञान यज्ञ संकल्प पत्र भरकर ज्ञान यज्ञ परिवार के सदस्य बनें। इसकी सदस्य संख्या का विस्तार बहुत तीव्र गति से तथा पूरे भारत में करना हमारी प्राथमिक आवश्यकता है। बीज के अभाव में खाद पानी दवा व्यर्थ है। दोनों एक दूसरे के पूरक है। इसलिए बीज रूप ज्ञान यज्ञ के भी महत्व को समझना चाहिए।

ज्ञान यज्ञ स्वयं में समाधान नहीं है, बल्कि समाधान पूरक है। यदि ज्ञान यज्ञ के साथ समाधान के प्रयत्न होंगे तो सफलता निश्चित है। यदि ज्ञान यज्ञ और व्यवस्था परिवर्तन अभियान अलग–अलग होंगे तो परिणाम आंशिक ही होंगे पूर्ण नहीं। इसलिए उचित होगा कि दोनों संगठन अलग–अलग कार्य करते हुए भी एक दूसरे के पूरक हों। ज्ञान यज्ञ तो पिछले बावन वर्षो से चल ही रहा है किन्तु व्यवस्था परिवर्तन अभियान की स्थापना और श्री गणेश तीस दिसम्बर को सेवाग्राम में ठाकुरदास जी बंग ने की है। ज्ञान यज्ञ परिवार की संगठन व्यवस्था का नाम ज्ञान यज्ञ मण्डल भी हो सकता है या और भी। सब साथी बैठकर तय कर लेंगे। ज्ञान यज्ञ परिवार के जो सदस्य व्यक्तिगत रूप से मिल कर भी एक सौ रूपया मासिक या एक हजार रूपया वार्षिक या चार हजार रूपया एकमुश्त केन्द्रीय कार्यालय में दान देंगे वे इस मण्डल के सदस्य होंगे। अन्य नियम

अगले अंक में जाएंगे। रामकृष्ण जी पौराणिक ज्ञान यज्ञ के प्रमुख होंगे तथा रमेश राघव जी इसके संयोजक होंगे । मैं तो संरक्षक हूँ ही । अब तक जो साथी संरक्षक सदस्य हैं वे स्वयंमेव ज्ञान यज्ञ मण्डल के सदस्य होंगे।

व्यवस्था परिवर्तन अभियान के संस्थापक ठाकुर दास जी बंग तथा सरक्षक मैं हूँ । अशोक गाडिया जी इसके राष्ट्रीय अध्यक्ष, ओमप्रकाश जी दुबे कार्यकारी अध्यक्ष, घनश्याम जी सचिव, सूरी जी कोषाध्यक्ष है जो बने रहेंगे। अगले राष्ट्रीय सम्मेलन का दायित्व आचार्य पंकज जी को दिया गया है। पंकज जी, दुबे जी तथा अन्य सब साथी मिलकर सम्मेलन की रूपरेखा तय करेंगे। ज्ञान यज्ञ मण्डल और व्यवस्था परिवर्तन अभियान के संगठन मिलकर संविधान मंथन सभा और श्रम शोषण मुक्ति अभियान पर विचार करेंगे। तब तक ये दोनों कार्य स्थापित रहेंगे।

(ख)ज्ञान यज्ञ विधि

चार प्रकार की कियाओं को मिलाकर ज्ञान यज्ञ होता है।

1 संक्षिप्त धार्मिक भावना प्रधान औपचारिकता।

2 विस्तृत सामाजिक बुद्धि प्रधान विचार मंथन।

3 स्वराज्य प्रार्थना।

4 दान यज्ञ।

कर्मकाण्ड के अन्तर्गत एक मिनट से तीस मिनट की समय सीमा में किसी भी भावनात्मक प्रणाली से कर्मकाण्ड पूरा किया जाता है। इसमें यज्ञ आदि भी हो सकता है और अगरबत्ती या दीपक जलाकर भी औपचारिकता पूरी हो सकती है। कुरान पाठ भी हो सकता है किन्तु समय सीमा पूरे विचार मंथन से पांचवे भाग से अधिक न हो। यह कर्मकाण्ड श्रद्धा पूर्वक किया जाए, किन्तु औपचारिकता तक ही सीमित रहे।

विचार मंथन के अन्तर्गत एक घण्टे से ढ़ाई घण्टे तक का किसी पूर्व निश्चित विषय पर स्वतंत्र विचार मंथन होता है। विषय सामाजिक, धार्मिक,

राजनैतिक, आर्थिक, वैश्विक या अन्य कोई भी हो सकता है। विचार मंथन की समय सीमा यज्ञ समय के पांच गुने से कम न हो। अधिक हो सकती है। यदि कोई गीत या भजन होता हो तो वह कर्मकाण्ड के मय में जूड़ सकता है, विचार मंथन में नहीं विचार मंथन पूरी तरह विषय केन्द्रित तथा स्वतंत्र होना आवश्यक है। उपदेश या प्रवचन से बचना चाहिए। विचार मथन के अन्तर्गत न कोई प्रस्ताव पारित हो न कोई अन्य योजना बने या अन्य चर्चा भी न हो। यदि करना ही हो तो प्रार्थना के बाद कार्यकम समाप्त घोषित करके ऐसी योजना या अन्य चर्चा हो सकती है। आज कल समाज सुधारकों की या चरित्र निर्माण करने वालों की बाढ़ सी आई हुई है। यह प्रवृत्ति ज्ञान यज्ञ के विपरीत प्रभाव डालती है। ऐसे प्रयत्न को कड़ाई से रोकना होगा। समापन के पूर्व तो ऐसे प्रयत्न बिल्कुल ही न हो।

स्वराज्य प्रार्थना इस यज्ञ का मुख्य भाग है। सब लोग विचार मंथन के बाद समापन के समय श्रद्धापूर्वक स्वराज्य प्रार्थना करते हैं प्रार्थना इस प्रकार है :– हे प्रभो मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं किसी दूसरे को अपनी इच्छानुसार संचालित करने की इच्छा या दुसरों द्वारा संचालित होने की मजबूरी से दूर रह सकूं जो लोग ऐसा कर सकते उन्हें बदलाव हेतु सहमत कर सकूं और यदि ऐसा भी न हो तो ऐसे विचारों का अहिंसक प्रतिरोध करूं।

प्रार्थना खड़े होकर करें तो अच्छा है अन्यथा बैठकर भी हो सकती है। प्रार्थना के बाद यज्ञ समाप्त हो जाता है। यदि संभव हो तो प्रसाद वितरण भी कर सकते है जो बाध्यकारी नहीं हो।

इस प्रणाली का चौथा भाग है दानयज्ञ। इसके अंतर्गत प्रत्येक साधक दान की घोषणा करता है। यह घोषणा दैनिक दान की भी हो सकती है और मासिक भी या वार्षिक की भी। यह घोषणा नकद दान की भी हो सकती है और वस्तु के रूप मे भी और समय दान के रूप में भी। कोई व्यक्ति कम से कम और अधिक से अधिक की किसी भी रूप में घोषणा कर सकता है। कोई चाहे तो तीनो रूपों में भी कर सकता है और कम रूपों में भी दान चाहे कभी

भी और किसी भी रूप मे दिया जाय किन्तु उसकी घोषणा एक जनवरी को प्रतिवर्ष अवश्य करनी चाहिये। दान के प्राप्त धन ,समय , या वस्तुएं स्थानिय ज्ञान यज्ञ परिवार की व्यवस्था के अन्तर्गत उपयोग की जा सकेगी। केन्द्रिय कार्यालय उक्त दान का उपयोग स्थानीय परिवार की सहमति से ही कर सकता है या सदस्यता शुल्क के रूप में कर सकता है अन्य रूपों में नहीं।

इन सामान्य यज्ञों में ज्ञान यज्ञ परिवार के सदस्य इकट्ठे होकर भी यज्ञ कर सकते हैं और व्यक्तिगत स्तर पर भी। यात्रा के समय भी यज्ञ किया जा सकता है। भी यज्ञ किया जा सकता है या लौटने के बाद भी कर सकते है। किन्तु माह में एक बार ज्ञान यज्ञ अवश्य होना चाहिये।

सामान्य यज्ञों के अतिरिक्त कुछ विशेष यज्ञ भी किये जाने चाहिए। ऐसे विशेष यज्ञ न्यूनतम तीन दिनों के होने चाहिए। इनमें प्रतिदिन एक सवा घण्टे का यज्ञ तथा पांच छः घण्टे का विचार मंथन हो। विचार मंथन दो सत्रों में भी हो सकता है और तीन सत्रों में भी। अन्य सभी विधि पूर्ववत् है।

ज्ञान यज्ञ का प्रत्येक संकल्पकर्ता प्रतिवर्ष एक जनवरी को अपने बीते वर्ष की ज्ञान यज्ञों की संक्षिप्त जानकारी, पिछले वर्ष की दान यज्ञ की जानकारी और अगले वर्ष की दान यज्ञ की संभावित योजना को मिलाकर केन्द्रीय कार्यालय को स्थानीय कार्यालय के माध्यम से जानकारी देगा।

विश्व भर में फैले ज्ञान यज्ञ परिवार की एकरूपता के लिए एक संगठन है जिसे ज्ञान यज्ञ मण्डल हो सकते है। ज्ञान यज्ञ मण्डल का सदस्य वही हो सकेगा जो न्यूनतम एक सौ रूपया मासिक, एक हजार रूपया वार्षिक या चार हजार रूपया एक मुश्त दान केन्द्रिय कार्यालय को देता है। ऐसा सदस्य व्यक्तिगत दान भी दे सकता है और संस्था के रूप में। ऐसा दानदाता व्यक्ति या संगठन एक सदस्य ज्ञान यज्ञ मण्डल में शामिल कर सकता है।

ज्ञान यज्ञ का प्रत्यक्ष प्रभाव शुन्य दिखता है किन्तु परोक्ष प्रभाव चमत्कारिक होता है। जैसे प्रातः भ्रमण का कोई प्रत्यक्ष लाभ नहीं दिखता किन्तु परोक्ष लाभ बहुत है वैसा ही इसका भी समझना चाहिए। यज्ञ का मानव स्वभाव

पर प्रभाव पड़ता है। इससे भावनाएं शुद्ध होती है। विचार मंथन से नीर क्षीर विवके शक्ति प्रबल होती है। स्वराज्य प्रार्थना से आत्मबल मजबूत होता है। दान यज्ञ से स्थानीय संगठन भी मजबूत होता है और केन्द्रीय संगठन भी। यह संगठन स्वयं में किसी के विरूद्ध कुछ नहीं करता न किसी के विरूद्ध सोचता है न ही योजना बनाता है किन्तु सभी प्रकार के विघटनकारी भेदभाव भूलकर माह में एक बार कुछ लोग एक साथ बैठने लगें यही समाज विरोधी तत्वों के लिए चिन्ता का पर्याप्त आधार बनेगा। देशभर में प्रयत्न करके ऐसे संकल्प पत्र भरवाने के लिए आप सबको प्रयत्न करना चाहिए जिससे भारत ही नहीं विश्व स्तर की समस्याओं के समाधान में ज्ञान यज्ञ परिवार अपनी निर्णायक भूमिका अदा कर सके।

सब सुधरेगा तीन सुधारे, नेता , कर कानून हमारे।

(ग)ज्ञान यज्ञ प्रगति समीक्षा

लगभग पचास वर्ष पूर्व की अपनी बाल्यावस्था में ही बजरंग लाल अग्रवाल जो उन्तीस अक्टूवर दो हजार छः के बाद बजरंग मुनि के नाम से जाने जाते हैं, ने यह निष्कर्ष निकाला कि विश्व की और विशेष कर भारतीय समाज व्यवस्था की वर्तमान समस्याओं का एकमात्र समाधान अनुकरण पद्धति को त्यागकर विचार मंथन पद्धति ही है । जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति तब तक स्वयं को गुरू और शिष्य दोनो भूमिकाओं में महसूस करता है जब तक आपातकालीन परिस्थितियां समाप्त न हों। सामान्य स्थितियों में कोई भी व्यक्ति स्वयं को या तो गुरू रूप में मानता है या शिष्य रूप में किन्तु एक साथ स्वयं को दोनों भूमिकाओं में महसूस नहीं कर पाता। वर्तमान परिस्थितियों को आपातकाल मानकर ज्ञानयज्ञ प्रणाली शुरू की। इस प्रणाली के अन्तर्गत प्रतिमाह एक संक्षिप्त धार्मिक अनुष्ठान करके किसी धार्मिक सामाजिक राजनैतिक आर्थिक विषय पर स्वतंत्र विचार मंथन शुरू हुआ। प्रारम्भ में यह कार्य अकेले ही शुरू हुआ किन्तु धीरे–धीरे शहर के अन्य लोग जुड़ते गये और यह ज्ञान यज्ञ पूरे रामानुजगंज शहर में विस्तार से

होने लगा। आमतौर पर लोगों को यह कार्य निरर्थक दिखता था किन्तु लोग तर्क और विश्वास के आधार पर जुड़ते ही चले गये।

धीरे–धीरे इसका अप्रत्यक्ष परिणाम दिखने लगा। मुनि जी की स्वयं की बौद्धिक तार्किक और नैतिक क्षमता का अभूतपूर्व विकास हुआ। विश्वास ऐसा बढ़ा कि सिर्फ सत्रह वर्ष की उम्र में ही शहर के लोगों ने उन्हें अपना नगरपालिका अध्यक्ष चुन लिया किन्तु उम्र की वैधानिक सीमा के कारण आठ वर्ष बाद ही वे कानूनी रूप से चुनाव लड़कर अध्यक्ष बन सके। त्यागभाव उनमें इतना था कि एक ही वर्ष में उन्होंने निरर्थक मानकर इस पद से इस्तीफा दे दिया। धीरे–धीरे लगातार उनका तार्किक और नैतिक विकास मजबूत होता रहा जो आज तक जारी है।

पारिवारिक दृष्टि से भी उनके परिवार की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी। परिवार के सभी आंतरिक विषय मिलजुलकर तथा एक साथ बैठकर विचार मंथन के बाद तय होते थे। इतना बड़ा परिवार होने के बाद भी न परिवार में कभी आंतरिक विवाद हुआ न रिश्तेदारों में। आर्थिक स्थिति को छोड़कर हम विचार करें तो इनके परिवार को पूरे क्षेत्र में एक सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है जो अब तक है।

धीरे–धीरे रामानुजगंज शहर में ज्ञान यज्ञ वालों की एक टीम बनती चली गयी। जो व्यक्ति जितना ही अधिक इस प्रणाली में जुड़ा उतना ही अधिक उसे लाभ मिला। यहां तक कि रामानुजगंज शहर की संपूर्ण राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था पर ज्ञान यज्ञ का प्रभाव पड़ा। ज्ञान यज्ञ में शामिल परिवारों पर तो इसका अच्छा प्रभाव पड़ा ही, न शामिल होने वालों पर भी इसका आंशिक प्रभाव पड़ा क्योंकि संपूर्ण शहर की समाज व्यवस्था पर सामूहिक प्रभाव पड़ता हुआ दिख रहा था। जातीय या साम्प्रदायिक टकराव शून्यवत् हो गया। गरीब–अमीर का भेदभाव कम हुआ। गुरूडम भी कम हुआ । सरकारी कर्मचारी व्यापारी और किसान मजदूर तक एक साथ बैठने लगे। बड़े–बड़े अपराध विरोधी संघर्षों में प्रतिष्ठा पूर्ण विजय प्राप्त की गई। सन् छियान्नवे का रामानुजगंज शहर पर सरकार का जो प्रशासनिक आक्रमण हुआ वह सम्भवतः पूरे भारत का अकेला अप्रकाशित संघर्ष कहा जा सकता है। यह अपने तरह का अकेला संघर्ष था जिसमें आक्रमण करने वालों में रामानुजगंज शहर से बाहर की प्रशासनिक, राजनैतिक

और मीडिया तक की शक्तियां एकजुट थीं तो दूसरी ओर थी रामानुजगंज की मुट्ठीभर प्रशासनिक राजनैतिक ,सामाजिक और मीडिया की एकता। खास बात यह थी कि पूरी तरह अहिंसात्मक संवैधानिक तरीके से रामानुजगंज की समाज व्यवस्था की विजय हुई और आक्रमणकारी व्यवस्था को कदम वापस करने पड़े। इस आक्रमण की कहानी जब समाज के समक्ष कभी आएगी तब समाज को जानकारी होगी कि ऐसे विशेष यज्ञों पर आक्रमण सिर्फ विश्वामित्र के यज्ञ तक ही सीमित नहीं थे। जब भी ज्ञान यज्ञ होगा तब आसुरी शक्तियां चिन्तित भी होंगी और आक्रमण भी करेंगी और साथ – साथ पराजित भी होंगी यह निश्चित है क्योंकि ज्ञान यज्ञ के प्रभाव की सफलता निर्विवाद है।

रामानुजगंज में ज्ञानयज्ञ की जो पद्धति पचास वषों से चलती रही उसमें माह में एक बार किसी भी परिवार में या सार्वजनिक स्थान पर तीन घण्टे का कार्यक्रम होता रहा । इस यज्ञ का प्रारम्भ किसी भी प्रतीकात्मक अधिकतम आधे घण्टे के धार्मिक आयोजन से होता था। अधिकांश परिवारों में यज्ञ से शुरूआत होती थी किन्तु मुस्लिम परिवारों में होते समय कुरान पाठ हुआ करता था। किसी भी स्थिति में समय सीमा आधे घण्टे से बढ़ नहीं सकती थी जिससे विचार मंथन में कमी न हो। आधे घण्टे की समय सीमा के बाद पूर्व निश्चित विषय पर खुली और स्वतंत्र चर्चा हुआ करती थी। इस बात के लिए विशेष सतर्कता थी कि ज्ञान यज्ञ में न कोई प्रस्ताव पारित हो न ही कोई निष्कर्ष घोषित हो। न कोई योजना या कार्यक्रम बने। यदि कोई योजना बनानी हो या सामूहिक निष्कर्ष निकालना हो तो यज्ञ समापन के बाद अलग बैठकर ही हो सकता है। यज्ञ में कभी –कभी कोई गीत भी हो जाया करता था किन्तु वह सब आधे घण्टे की धार्मिक समय सीमा के अन्दर ही रहता था, बाहर नहीं। इस तरह यह यज्ञ और ज्ञान का मिश्रित प्रयोग सफलतापूर्वक चलता रहा।

रामानुजगंज और रामानुजगंज से बाहर के लोग रामानुजगंज की इस सामाजिक सफलता का श्रेय बजरंग मुनि जी को देते रहे हैं किन्तु मुनि जी स्वयं भी कहते है और मैं भी समझता हूॅ कि इस सम्पूर्ण सफलता का श्रेय ज्ञान यज्ञ प्रणाली को है जिसने मुनि जी को भी इस योग्य बनाया और उनके परिवार को भी तथा रामानुजगंज के समाज को भी। मुनि जी स्वयं बताते हैं कि उन्होनें कभी न शिक्षा दी न उपदेश दिया क्योंकि शिक्षा

और उपदेश देने वालों की दुकानें तो गली–गली मिल सकती हैं। इनमें कई लोग अच्छे भी हो सकते हैं और कई लोग ठग भी। दोनों ही प्रकार के लोग साधुवेष में समाज सेवक बन कर घूम रहे हैं। खास जरूरत है उस शक्ति के विकास की जो काल नेमि और हनुमान की पहचान पृथक कर सके। ऐसी पहचान न वेशभूषा से हो सकती है न पूजापाठ से और न ही उनके आचरण से। इसलिए वर्तमान समय को आपातकाल मानकर ऐसी पहचान बनाने के प्रयत्नों को छोड़ दिया जावे और स्वयं अपनी चिन्तन शक्ति का विकास किया जावें। यदि अपनी चिन्तन शक्ति का विकास होगा तो ऐसी पहचान अपने आप विकसित हो जायेगी। यही एक मात्र मार्ग है जिसकी सफलता का प्रयोग रामानुजगंज में हो चुका है।

मुनि जी की सोच है कि भारतीय समाज की अधिकांश समस्याओं का अप्रत्यक्ष समाधान ज्ञान यज्ञ से है। किन्तु इसका व्यापक प्रभाव तभी स्पष्ट होगा जब सम्पूर्ण भारत में यह प्रणाली विकसित हो। रामानुजगंज में प्रारम्भिक परिणाम दिखने में दस पन्द्रह वर्षो का समय लगा था किन्तु अब इसका प्रत्यक्ष प्रभाव तीन वर्षो में ही दिख सका है। व्यक्तिगत यज्ञ का प्रभाव यज्ञकर्ता की मानसिक, शारीरिक, पारिवारीक आर्थिक स्थिति पर पड़ना निश्चित है और यदि सामूहिक यज्ञ हुआ तो उसका लाभ संपूर्ण क्षेत्रीय समाज पर होगा। इसलिए ज्ञान यज्ञ का विस्तार सम्पूर्ण भारत में तीव्र गति से करना चाहिए। नयी संशोधित योजना अनुसार ज्ञान यज्ञ के चार भाग किये गये हैं।

(1) प्रतीकात्मक संक्षिप्त धार्मिक अनुष्ठान।

(2) पूर्व निश्चित विषय पर स्वतंत्र और व्यापक विचार मंथन।

(3) संकल्प मिश्रित लोक स्वराज्य प्रार्थना।

(4) प्रतिवर्ष एक जनवरी को दान यज्ञ।

ये चार कार्य करने वाले व्यक्ति को ज्ञान यज्ञ परिवार का सदस्य माना जावेगा एक ही परिवार के अलग–अलग सदस्य अलग–अलग भी फार्म भर सकते हैं और एक साथ भी। न्यूनतम तीन वर्ष के यज्ञ के बाद क्षेत्रीय विकास का अनुमानित आकलन किया जायेगा।

ज्ञान यज्ञ दो प्रकार के होंगे। (1)सामान्य (2)विशेष। सामान्य यज्ञ में कोई भी व्यक्ति संगठन के अभाव में माह में एक बार पूर्व निश्चित समय और दिन को बैठकर प्रतीकात्मक यज्ञ करेगा जो एक मिनट से लेकर तीस मिनट तक का हो सकता है। यज्ञ के लिए भौतिक यज्ञ भी हो सकता है और अगरबत्ती जलाकर या दीपक जलाकर भी हो सकता है। अन्य किसी विधि से भी यज्ञ प्रारम्भ किया जा सकता है। किन्तु यज्ञ का प्रारम्भ किसी भावना प्रधान विधि से होना आवश्यक है। इसके बाद न्यूनतम एक घण्टे तक किसी पूर्व निश्चित विषय पर विचार मंथन होना आवश्यक है। यदि और कोई न हो तो अकेले भी कर सकते हैं। यज्ञ में कोई गीत या प्रार्थना हो तो विचार मंथन के समय में कटौती न हो।

(ख)विचार मंथन के बाद कोई प्रस्ताव पारित करना हो या निष्कर्ष निकालना हो या योजना बनानी हो तो ज्ञान यज्ञ में न करके अलग से किया जा सकता है जो यज्ञ और विचार मंथन की औपचारिक समाप्ति की घोषणा के बाद ही हो सकता है, पूर्व नहीं।

(ग)ज्ञान यज्ञ समापन के समय लोक स्वराज्य प्रार्थना होगी जो इस तरह है ———

हे प्रभु आप मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं किसी दूसरे को अपनी इच्छानुसार संचालित करने की इच्छा या दूसरों द्वारा संचालित होने की मजबूरी से दूर रह सकूं, जो लोग ऐसा नहीं कर सकते उन्हें बदलाव हेतु सहमत कर सकूं , और यदि ऐसा भी न हो तो ऐसे विचारों का अहिंसक प्रतिरोध करूं।

यह प्रार्थना आवश्यक हो तो यज्ञ के बाद और विचार मंथन के पूर्व भी रख सकते हैं।

(घ) ज्ञान यज्ञ परिवार का प्रत्येक सदस्य प्रति वर्ष एक जनवरी को दान यज्ञ करेगा । इसमें वह दान देगा जो स्थानीय यज्ञ परिवार व्यवस्था के लिए भी हो सकता है और केन्द्रीय व्यवस्था के लिए भी। दान यज्ञ नगद रूप में भी हो सकता है और घोषणा के रूप में भी किन्तु इसकी सूचना केन्द्रीय कार्यालय को अवश्य मिल चाहे दान स्थानीय हो या केन्द्रीय । दान रूपये पैसे के रूप में भी हो सकता है और वस्तु के रूप में भी।

(च) ज्ञान यज्ञ चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक उसमें सब लोगों को अधिक से अधिक संख्या में शामिल करने का प्रयत्न किया जावे चाहे वे ज्ञान यज्ञ परिवार के सदस्य हों या न हों।

(3) विशेष यज्ञ विशेष आयोजन के रूप में न्यूनतम तीन दिनों के होंगे। इनमें प्रतिदिन एक से सवा घण्टे के यज्ञ के बाद प्रतिदिन पांच छः घण्टे की चर्चा होगी जो स्थानीय व्यवस्था अनुसार दो या तीन सत्रों में हो सकती है। एक बार स्वराज्य प्रार्थना भी अवश्य होगी।

(4) स्वतंत्र विचार मंथन में वैचारिक साहित्य का या मुनि जी की पुस्तकों का भी सहारा लिया जा सकता है।

(5) एक ज्ञान यज्ञ मण्डल होगा जो ज्ञान यज्ञ की संगठनात्मक व्यवस्था देखेगा। सम्पूर्ण आय–व्यय की व्यवस्था भी ज्ञान यज्ञ मण्डल की देख रेख में होगी। ज्ञान यज्ञ परिवार को कोई भी सदस्य जो व्यक्तिगत रूप से या संगठित ईकाई के रूप में न्यूनतम एक सौ रूपया मासिक या एक हजार रूपया वार्षिक या चार हजार एक मुश्त का दान यज्ञ करेगा वह इस कमेटी का सदस्य हो सकेगा।

मैं आश्वस्त हूं कि वैसे तो यह ज्ञान यज्ञ प्रणाली विश्व के लिए लाभदायक होगी किन्तु भारतीय समाज व्यवस्था के लिए यह विशेष प्रभावकारी होगी। साथ ही परिवार को पारिवारिक और व्यक्ति को व्यक्तिगत लाभ होना तो निश्चित ही है। मुनि जी न यह भी घोषणा की है कि यदि कोई सज्जन रामानुजगंज की व्यवस्था देखना चाहें तो वे कभी भी सूचना देकर वहां आ सकते हैं। उन्हें मार्ग व्यय के रूप में एक तरफ का रेल टिकट हमारी ओर से दिया जायेगा। निवास और भोजन व्यवस्था भी निःशुल्क रहेगी। वर्ष भर में अधिकतम एक सौ दर्शनार्थियों तक की व्यवस्था हो सकती है। आप निम्न फोन नं0 पर मुनि जी चर्चा कर सकते है। 9968374100

लेखक : आनन्द कुमार गुप्त

शिक्षा : बी.ए.,एल.एल.बी.

पता : शिवपुर , नमनाकला, अंबिकापुर

जिला – सरगुजा , छत्तीसगढ़ पिन कोड 497001

मोबाइल : 94242–51895, 98261–57295

कार्य : कलाक्षेत्र में अभिनय, लेखन निर्माण एवं निर्देशन।

अभिनय : मृत्युदाता सहित 10 फिल्में एवं शक्तिमान सहित 15 धारावाहिक।

रचनाएं : नुक्कड़ नाटक, एड्स मौन हत्यारा, जान है तो जहान है, हम सब एक हैं, खुशखबरी, लोक स्वराज्य, बाल विवाह, मतदाता जागरूकता, अंध विश्वास इत्यादि।
विशेष : 2000 नुक्कड़ नाटकों का सम्पूर्ण भारत में प्रदर्शन।

सब सुधरेगा तीन सुधारे, नेता, कर कानून हमारे ।

(घ) ज्ञान यज्ञ मीमांसा

जब से यह सृष्टि बनी है तभी से दो प्रवृत्तियों के बीच संघर्ष चला है (1)दैवी प्रवृत्ति(2)आसुरी प्रवृत्ति। दोनों में से कोई भी प्रवृत्ति कभी समाप्त नहीं होती, किन्तु समय–समय पर ये मजबूत या कमजोर अवश्य होती रहती हैं। जब दैवी प्रवृत्तियां मजबूत होती हैं तब राक्षसी प्रवृत्तियों के लोग जंगलों में पलायन कर जाते हैं या समाज में ही दब जाया करते हैं। दूसरी ओर जब विपरीत होता है तब देवी प्रवृत्ति के लोग गुलाम हो जाते हैं या मजबूर हो जाते हैं। यह टकराव सदा चलता रहा है और चलता रहेगा किन्तु समय –समय पर इस टकराव का शीर्षक बदलता रहा है। कभी इस टकराव को देवासुर संग्राम का नाम दिया गया तो कभी मानव – दानव टकराव का। आज हम इस टकराव को सामाजिक समाज विरोधी (Social anti Social) के बीच संघर्ष के रूप में देखते हैं। नाम भले ही बदल जावे किन्तु अर्थ वही है जो देवासुर संग्राम का था।

दैवी प्रवृत्तियों की आसुरी प्रवृत्तियों से सुरक्षा के लिए समाज में एक अलग सेल Cell होता है जिसे राज्य कहते हैं। सामान्य काल में, जब आसुरी प्रवृत्तियां दबी रहती हैं तब राज्य सुरक्षा के साथ –साथ कुछ अन्य सामाजिक कार्य भी करने लगता है, किन्तु जब समाज की सुरखा में समाज विरोधी तत्वों की ओर से चुनौती खड़ी हो जावे तब राज्य स्वयं को सुरक्षा तक सीमित कर

लेता है और ऋषि –मूनि आश्रम या सामाजिक संस्थाएँ चरित्र निर्माण सामाजिक उत्थान आदि का कार्य करते हैं। किन्तु आपात स्थिति में जब समाज विरोधी तत्व राज्य से भी न दबें या वे राज्य के साथ ही मिल जावें तब ऋषि मुनि आचार्य तथा अन्य सामाजि संस्थाएँ चरित्र निर्माण समाज उत्थान की दिशा छोड़कर या रोककर समाज विरोधी तत्वों पर नियंत्रण की योजना में सकिय हो जाती हैं। कभी–कभी तो महिलाओं तक को ऐसे संघर्ष का नेतृत्व करना पड़ा। भारतीय इतिहास ऐसे विशेष उदाहरणों से भरा पड़ा है जब पुरूष शक्ति ने भी हार मान ली और देवियों ने मोर्चा सम्भाला। यदि हम ऐसे इतिहास को छोड़ भी दें तो रामायण और महाभारत के संघर्ष तो हमारे सामने प्रत्यक्ष ही हैं। ऐसे संकट हाल में समाज की सारी प्राथमिकताएँ भी बदल जाया करती हैं और परिभाषाएँ भी। उस समय धर्म की भी परिभाषा बदल जाती है और सत्य की भी। ऐसे समय में आसुरी शक्तियों पर विजय ही एकमात्र लक्ष्य हो जाता है। रामायण काल में जब राम जंगल में जाते हैं तो तत्कालीन ऋषि मुनि और आश्रम राम को शस्त्रास्त्र भी देते हैं और चलाने की ट्रेनिंग भी। स्पष्ट है कि ऐसे आपत्तिकाल में आश्रम भी अपनी प्राथमिकताएँ बदलकर चरित्र निर्माण से सुरक्षा की ओर सरक जाते थे। जब युद्ध शुरू हुआ तब राम ने मेघनाद के यज्ञ के विध्वंस का आदेश देकर यह स्थापित किया कि आपत्तिकाल में यज्ञ से अधिक यज्ञ के परिणाम का महत्व होता है। यदि यज्ञ से दैवी पक्ष मजबूत होगा तो ऐसे यज्ञ की सुरक्षा होगी और आसुरी पक्ष मजबूत होगा तो यज्ञ का विध्वंस भी होगा। महाभारत काल में कृष्ण ने युधिष्ठिर को असत्य बोलने हेतु प्रेरित किया क्योंकि उस समय वह युद्ध मानवता की सुरक्षा का प्रतीक बन गया था। युद्ध भूमि में कृष्ण ने युधिष्ठिकर को असत्य बोलने हेतु प्रेरित किया क्योंकि उस समय वह युद्ध मानवता की सुरक्षा का प्रतीक बन गया था। युद्ध भूमि में कृष्ण ने अर्जुन सहित पाण्डवों को जो ज्ञान दिया वह ज्ञान ही युद्ध का निर्णायक आधार बना गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को ऐसे समय में ज्ञान यज्ञ की विशेष महत्ता समझाई

। पूरी गीता ज्ञान यज्ञ के महत्व को स्थापित करती है। अष्टावक्र महागीता तो सम्पूर्ण रूप से ज्ञान यज्ञ की महत्ता से ही भरी पड़ी हैं। स्वयं सिद्ध है कि चाहे राम हों या कृष्ण, सबने ऐसी विशेष स्थिति में परम्परागत मान्यताओं से हटकर ज्ञान का सहारा लिया क्योंकि ऐसी विपरीत परिस्थितियों में ज्ञान ही एकमात्र सहायक माना जाता है।

भारतीय संस्कृति में यज्ञ की विशेष महिमा रही है जो आज भी किसी न किसी रूप में स्थापित है। सामान्यतया यज्ञ पर्यावरण शुद्धि के लिए ही महत्वपूर्ण होते हैं यह बात प्रमाणित है किन्तु विशेष परिस्थितियों में विशेष यज्ञ भी होते रहे हैं यह यथार्थ भी हमारा इतिहास बताता रहा है। ऐसे विशेष यज्ञों की प्रामाणिकता सिद्ध करने के वैज्ञानिक प्रयत्न भी निरन्तर जारी हैं और ये प्रयत्न सफलता की ओर बढ़ भी रहे हैं।

ज्ञान यज्ञ एक ऐसा ही विशेष यज्ञ है जो विशेष परिस्थितियों में विशेष विधि से होता है। जब समाज में सामान्य स्थिति होती है तब समाज मुख्य रूप से भावना प्रधान होता है तथा ऋषि मनियों महापुरूषों विद्धानों के मार्गदर्शन में चलता रहता है। ऐसे समय में समाज को ज्ञान यज्ञ की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि ज्ञान पुंज समाज का मार्गदर्शन करते रहते हैं। किन्तु जब ऐसे ऋषि–मुनियों, विद्धानों, महापुरूषों का स्थान व्यवसायी प्रवृत्ति के लोग ले लें तब समाज दुविधा में फंस जाता है और जब ऐसा स्थान धूर्तो या स्वार्थी राजनेताओं के पास केन्द्रित हो जावे तब तो आपातकालीन खतरा ही उत्पन्न हो जाता है। ऐसे धूर्त लोग भावनाओं को शोषण का माध्यम बनाना शुरू कर देते हैं। और समाज इन पेशेवर या धूर्त धर्मात्माओं के चक्रव्युह में लगातार अन्दर तक फंसता चला जाता है। ऐसे ही संकटकालीन चक्रव्युह से बाहर निकलने का सबसे सहज सरल मार्ग है'' ज्ञान यज्ञ ''।

हम भारत की वर्तमान स्थिति पर विचार करें। राज्य व्यवस्था ने समाज व्यवस्था को पूरी तरह निगल लिया है। परिवार व्यवस्था को लगातार तोड़ा जा रहा है। ग्राम गणराज्य व्यवस्था को समाप्त करके एक राज्याश्रित पंचायती राज व्यवस्था स्थापित की जा रही है जो एक ओर तो शासन की गुलाम है दूसरी ओर गॉव तक में राजनैतिक गुटबन्दी के विष बीज बो रही हैं समाज को धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्रीयता, उम्र, लिंग, उत्पादक उपभोक्ता और गरीब –अमीर आदि के अनेक आधारों पर विभाजित करके वर्ग निर्माण के सुनियोजित प्रयत्न जारी है जो धीरे–धीरे वर्ग विद्वेष की दिशा में बढ़ रहे हैं । हर मामले में निष्कर्ष निकालने और कार्यान्वित कराने का सारा दायित्व सरकार ने इस तरह ले लिया है कि समाज के आम लोग की चिन्तन शक्ति अवरूद्ध हो जावे और वह अधिक से अधिक राजनीति और राजनीतिज्ञों पर निर्भर होता चला जावे। राज्य का आचरण जब संदेहास्पद होता था तब समाज धर्म प्रमुखों की ओर देखना शुरू करता था किन्तु वर्तमान समय में धर्म प्रमुखों ने भी निराश ही किया है। धर्म प्रमुख समाज की राज्य से सुरक्षा करने के स्थान पर तीन वर्गो में बंट गये। (1)धर्म के नाम पर सत्ता संघर्ष में शामिल हो गये (2)धर्म के नाम पर व्यवसाय खड़ा कर लिए (3)सामाजिक सुरक्षा को असंभव प्रयत्न मानकर समाज को चरित्र निर्माण आदर्श परिवार व्यवस्था नशा मुक्ति , व्यायाम आदि के उपदेश देने लगे । तीसरे प्रकार के लोगों के समक्ष संघर्ष के अभाव की मजबूरी है अन्यथा वे संघर्ष की दिशा में शामिल भी हो सकते हैं किन्तु शेष दो प्रकार के संगठनों से तो कोई उम्मीद ही व्यर्थ है।

ऐसे ही संकट काल के लक्षण हैं कि समाज में ग्यारह समस्याऍं (1)चोरी डकैती (2)बलात्कार (3)मिलावट कमतौल (4)जालसाजी (5)हिंसा,आतंक(6)भ्रष्टाचार (7)चरित्र पतन (8)साम्प्रदायिकता (9)जातीय कटुता (10)आर्थिक असमानता (11)श्रमशोषण'' लगातार बढ़ती रहती हैं। भारत में

सभी समस्याएँ लगातार बढ़ रही है और किसी भी राजनैतिक दल के या सामाजिक ,धार्मिक संगठन के पास इन ग्यारह में से किसी एक भी समस्या के समाधान की कोई योजना नहीं है। भारतीय राजनीति का स्वयं का ही चरित्र लगातार गिरता जा रहा है । राजनीति ने भारत में लोकतंत्र की आदर्श परिभाषा लोक नियंत्रित तंत्र को चुपचाप और संवैधानिक तरीके से बदलकर लोक नियुक्त तंत्र कर दिया और इस तरह उसने वोट देने का एक अधिकार देकर समाज व्यवस्था के सारे अधिकार अपने पास समेट लिये। ऊपर से यह भी कि समाज में बढ़ रही ग्यारह समस्याओं का सारा दोष भी समाज पर ही डाला जा रहा है और हमारी धार्मिक सामाजिक संस्थाएं भी इन कार्यो के लिए समाज को ही दोषी मानने की भूल करती रहती हैं। भारत की संवैधानिक,राजनैतिक व्यवस्था असंवेधानिक, आपराधिक व्यवस्था से समाज को सुरक्षा देने में असफल हो गई है और हमारे धार्मिक प्रमुख भी या तो बहती गंगा में हाथ धो रहे हैं या किंकर्तव्यविमुढ़ होकर कुछ भी समाज सुधार के कार्य मैं लगे हैं।

समाज के समक्ष ऐसी ही विशेष परिस्थिति उत्पन्न होती है तब दीर्घकालिक उपाय करे पड़तें हैं और ऐसे ही दीर्घकालिक उपाय का आधार है ''ज्ञान यज्ञ''। सामान्य रूप से समाज भावना प्रधान और महापुरूषों का अनुकरण करने वाला होता है किन्तु जब महापुरूषों के स्थान पर धूर्त या निराश लोग बैठ जावें तब समाज यह पहचान नहीं पाता कि वह किसका अनुकरण करे। ऐसी विशेष स्थिति में अनुकरण प्रणाली के स्थान पर विचार मंथन प्रणाली को आगे बढ़ाने की परम्परा रही है जिसे ज्ञान यज्ञ कहते हैं।ये यज्ञ सम्पूर्ण समाज में अनुकरण प्रणाली से हटकर स्वयं निष्कर्ष निकालने की प्रणाली को जागृत करते हैं। ये यज्ञ बड़ी मात्रा में समाज में विभिन्न विषयों पर बहस कराते हैं और ऐसी स्वतंत्र बहस के माध्यम से समाज में प्रचलित असत्य धारणाओं या प्रचार के समक्ष चुनौती खड़ी करते हैं। ये यज्ञ समाज

को आपत्ति काल का आभास कराते हैं और प्रेरित करते हैं कि समाधान का मार्ग दूसरों के बताए मार्ग से न निकलकर स्वयं के प्रयत्नों से ही निकलेगा। ऐसे यज्ञों का चमत्कारिक प्रभाव होता है। यह प्रभाव प्रत्यक्ष नहीं दिखता न ही ऐसे यज्ञों से कोई टकराव की स्थिति आती है किन्तु इन यज्ञों का प्रच्छन्न धूर्तता पर मारक प्रभाव अवश्य होता है। इन यज्ञों का यह भी प्रभाव होता है कि इनके माध्यम से पारिवारिक, सामाजिक एकता भी मजबूत से मजबूत हो जाती है। ज्ञान यज्ञ करने वाले के मन में स्वयं ही एक आत्मविश्वास जगता है क्योंकि अब वह दूसरों के मार्गदर्शन का पिछलग्गू मात्र न होकर स्वयं भी निर्णय करने की शक्ति विकसित कर रहा है। परिवार की पारिवारिक व्यवस्था पर तो ज्ञान यज्ञ का तत्काल और जादुई प्रभाव होता ही है किन्तु कालान्तर में धीरे–धीरे समाज पर भी यह प्रभाव दिखने लगता है।

प्राचीन काल में भी महापुरूषों ने ज्ञान यज्ञ का सहारा लिया। विश्वामित्र का यज्ञ कोई सामान्य यज्ञ न होकर विशेष यज्ञ था तभी तो राक्षस उसमें बाधा डालते थे अन्यथा पर्यावरण सुरक्षा यज्ञ से वे इतने चिन्तित क्यों होते। राम और कृष्ण ने भी ऐसे समय में विशेष यज्ञों का सहारा लिया। बजरंग मुनि जी ने पिछले पचास वर्षो से ज्ञान यज्ञ का चमत्कारिक प्रभाव का अनुभव किया है। ज्ञान यज्ञ का परिवार से समाज तक पर अप्रत्यक्ष दूरगामी और निश्चित प्रभाव होता है यह स्वयंसिद्ध है। किन्तु ज्ञान यज्ञ स्वयं में समस्याओं का समाधान न होकर समाधान सहायक है तथा समाधान का मार्ग प्रशस्त करेगा। ज्ञान यज्ञ आपको दूसरों का अनुकरण करने की अपेक्षा स्वयं निणर्य करने की दिशा में प्रेरित करेगा तथा आपकी नीर क्षीर विवेक शक्ति को जागृत करेगा। ज्ञान यज्ञ की यह खास विशेषता है कि यह आपको दूसरो द्वारा ठगे जाने से बचायेगा और आपकी पारिवारिक सामाजिक सोच को समृद्ध करेगा। सबसे खास बात यह है कि ज्ञान यज्ञ का प्रभाव मस्तिष्क पर होता है । सामान्य रूप से मस्तिष्क और हृदय की सकियता का संतुलन होना चाहिए

जो वर्तमान समय में पूरी तरह असंतुलित है। जैसे वात, पित्त और कफ का संतुलन बिगड़ जाने से शरीर अस्वस्थ हो जाता है, वैसे ही भावना और बुद्धि का भी संतुलन बिगड़ जाने का हानिकारक प्रभाव होता है। धूर्त लोग लगातार स्वयं तो बुद्धि प्रधानता की ओर सकिय रहते हैं किन्तु समाज को प्रयत्न पूर्वक भावना प्रधान बनाने की दिशा में लगाये रखते हैं। ज्ञान यज्ञ इस असंतुलन को दूर करेगा।

वर्तमान समय में परिवार व्यवस्था तथा समाज को कमजोर करने और तोड़ने का जो षडयंत्र चल रहा है उसे इसी तरह देखते रहना हमारी कायरता का प्रतीक है। इस षडयंत्र को तोड़ने में ज्ञान यज्ञ की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका संभव है। हम आपका आहृवान करते हैं कि आप ज्ञान यज्ञ अभियान से जुड़े और इस अभियान को शक्ति प्रदान करें।

लेखक – रमेश राघव,
संयोजक – ज्ञान यज्ञ परिवार , मो0 9868147029
कार्यालय पता – एफ0एफ0–47, पुराना थाना मंगल बाजार,
लक्ष्मीनगर,दिल्ली–92
मो0 9968374100

प्रश्नोत्तर

(च)श्री महावीर सिंह रिटायर्ड पुलिस उप अधीक्षक, नोएडा, उ0प्र0।

मैं सर्वोदय का कार्यकर्ता हूँ। ग्राम स्वराज्य की दिशा में करीब बीस वर्ष पहले रिटायर्ड न्यायाधीश कामतानाथ जी गुप्ता ने भी एक पुस्तक लिखी थी जिसका शीर्षक '' हमारा संविधान हमारी विशेष बाधा ''। उन्होंने उस समय ग्राम स्वराज्य की जैसी अवधारणा लिखी लगभग वही बात आप भी लिख रहे

हैं। आप दोनों के विचार पढ़ते ही आसानी से समझ में आने वाले हैं। फिर क्या कारण है कि ये विचार तेज गति से नहीं बढ़ रहे। पुस्तक आपको भेज रहा हूँ।

उत्तर – रिटायर्ड जज कामता नाथ जी गुप्ता की पुस्तक को मैंने पढ़ा । मुझे यह संतोष हुआ कि ग्राम स्वराज्य की जो अवधारणा गांधी जी की थी और जय प्रकाश जी ने फिर से आगे ले जाने का असफल प्रयास किया उसी प्रयास की दिशा में कामता जी की स्पष्ट सोच रही है। कामता जी ने समाज और सरकार का अन्तर स्पष्ट किया है । कामता जी ने आदर्श ग्राम को व्यवस्था का परिणाम बताया है अर्थात् जब तक स्वराज्य ग्राम व्यवस्था नहीं होगी तब तक आदर्श ग्राम बन ही नहीं सकते।

मुझे दुख है कि कामता नाथ जी के इतने साफ विचारों वाली पुस्तक सर्वोदय के मित्रों ने क्यों नहीं पढ़ी। कामता नाथ जी के विचारों को सर्वोदय के मित्रों को छोड़कर कोई अन्य संगठन वाला तो न पढ़ेगा न समझेगा क्योंकि जब सर्वोदय के लोग ही सर्वोदय के लोगों ने नहीं पढ़ी या नहीं समझी उससे यह आभास होता है कि यह पुस्तक सन् इक्यासी के बाद लिखी गई और तब तक का सर्वोदय का आधिकारिक संगठन साम्यवादियों की गोद में जा चुका था जिसका प्रभाव अब तक स्पष्ट दिख रहा है।

आपने पुस्तक भेजकर मेरा उत्साह बढ़ाया है। कामता नाथ जी आज भले ही उपलब्ध न हो, किन्तु मैं उन्हें आश्वस्त करता हूँ कि हम सब लोग आपकी बताई दिशा पर आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे। मुझे यह पूरी तरह अंदाज है कि भारत के वामपंथी सर्वोदय को शासन मुक्ति शोषण मुक्ति की दिशा में एक इंच भी आगे नहीं जाने देंगे। उन्होंने सर्वोदय को साम्प्रदायिकता और स्वदेशी नामक दो ऐसे झुनझुने थमा दिये हैं कि इन्हें ग्राम स्वराज्य लोक

स्वराज्य के लिए सोचने की फुर्सत ही नहीं। बहुत कठिनाई से ही सही किन्तु अब सर्वोदय का एक बड़ा तबका इस दिशा में सोचने लगा है। इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि आप जैसे प्रमुख सकिय सर्वोदयी ने यह पुस्तक मुझे भेजने की जरूरत समझी अन्यथा कुछ सर्वोदयी तो घूम–घूम कर मेरे विरूद्ध दुष्प्रचार में संलग्न रहते हैं जिन्हें सर्वोदयी कार्यकर्ताओं से ही उत्तर भी मिलता रहता है। आप इस दिशा में सकिय रहें कि हम कामता जी के विचारों को आगे बढ़ाने में सफल हो सकें। मेरी आपको सलाह है कि आप भारत के दस पन्द्रह प्रमुख गॉधीवादियों को यह पुस्तक भेजे तो संभव है कि उनकी कुछ आंख खुले।

(छ) श्री गोपीराम साक्षी, तिला रोड सागर मध्य प्रदेश।

आपने मेरे पत्र को ज्ञान तत्व 146 में समावेश करते हुए कुछ शंकाएँ व्यक्त की जिनकी प्रतिकिया मैंने दिनांक 14 जनवरी दो हजार आठ को प्रषित की लेकिन उसका उल्लेख ज्ञानतत्व अंक 147 में नहीं हो सका। हो सकता है कि ज्ञानतत्व 148 मे उसका उपयोग करें।

पहली द्ष्टि में मैने आशंका आपकी नीयत पर की उसका आधार हिन्दू मानसिकता का दुराग्रही वर्ण श्रेष्ठता का पक्षधर मानवता के विरूद्ध और . एस. एस. का संलग्न 25 सूत्रीय (अब 30 सूत्रीय) दस्तावेज है इसके पुनर्प्रकाशन का साहस आप भी नहीं जुटा पाएगें, क्योंकि यह जमीनी कार्यकर्ताओ के लिये दिये गये गोपनीय निर्देश है। ये लोग और न जाने क्या –क्या राष्ट्रविरोधी गतिविधियां करते रहते होगें। इन सूत्रों का परिपालन पूरे देश में अपने छद्म रूपों में आज भी हो रहा हैं। इसे मनुस्मृति के प्रक्षिप्त नियमों की तरह का पुनर्सस्करण कहना चाहिए। अतः नियत पर शंका करने का सुनिश्चित आधार है क्योंकि हिन्दू कोड विल का विरोधी यह वर्ण सभी राजनैतिक पार्टियो में घुसकर देश के वर्तमान सम्पूर्ण तंत्र को भ्रष्ट व अपराधी बना दिया।

यह देश के किसी एक सम्प्रदाय के खिलाफ अपना औचित्य सिद्ध करता हुआ राष्ट्रीय होने का दम्भ यदि भरता तो उसके उक्त दस्तावेज से सिद्ध नहीं होता। वह तो मूलवासियो व उसके जैसे सभी समाज वर्ग के खिलाफ है अर्थात समता स्वतंत्रता न्याय बन्धुत्व पर आधारित संविधान नहीं चलेगा।

यह अच्छा ही है कि उसकी कुचेष्टा जगजाहिर हो गई और कबाब मे हड्डियां पड गई। चुकि मुझे डा0 प्रभू सत्यशीलम प्रेस सागर ने ज्ञानतत्व 139 से जोड़ा और विचारोत्तेजना पूर्वक मैंने वह पत्र लिखा। आपके सम्पूर्ण प्रयत्न को जानने के लिए डॉ0 प्रभु से मैंने और सिलसिलेवार जानकारी चाही तब उन्होंने रामानुजगंज की प्रारम्भिक सामग्री दी। उनके अध्ययन से मुझे लगा कि जो प्रश्न उठ रह हैं या भविष्य में उठेंगे उनके समाधान आप पूर्व में दे चुके हैं।

मुझे आप जन का सम्पूर्ण प्रयास इतना तथ्यात्मक , तार्किक, प्रासंगिक, भला व अनुकरणीय प्रतीत हुआ कि मैंने उसके प्रचार–प्रसार का कार्य आरम्भ कर दिया और लोग तेजी से सहकारी हो रहे हैं । विचार मंथन पहला सूत्र है जिसे मेरे सम्पर्कियों ने स्वीकार कर लिया। शीघ्र ही आपके इस मिशन को और भी साथी मिलेंगे। लेकिन 1947 से 1950 तक की मानवता के खिलाफ की साजिशें सुदीर्ध चार हजार वर्षो के इतिहास में हिंसात्मक व अमानवीय रही है ऐसा लगता है कि यह वर्ण और इसके समर्थित ग्रंथों में अच्छाईयां प्रक्षिप्त हैं। अमानवीय कृत्य इसका स्वभाव है। समस्त अच्छाइयों के सागर में इस वर्ण की एक बूँद' क्षीर सिन्धु बिनसाई 'कहावत को चरितार्थ करेगी। अतः अपनी सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहें, क्योंकि महात्मा गॉधी, डॉ0 अम्बेडकर का इतिहास दोहराने में यह वर्ण पीछे नहीं रहेगा। मैं इस अकेले वर्ण को ही सर्वाश दोषी इसलिए कह रहा हूँ कि संख्या 3/2 प्रतिशत रहकर भी सत्ता, शासन ,प्रशासन में 97 प्रतिशत घुसा है। अतः न्यायदण्ड इस पर ही भारी

होना चाहिए। समस्त उपद्रवों के लिए आदिकाल से यह मात्र जिम्मेदार है। दूरदर्शन मंथन कार्यक्रम के लिए मैंने स्वामी अग्निवेश को चेतावनी दी थी। वह सत्य हुई। यह वर्ण मानवता प्रधान समतामूलक जनवाद का कमात्र दोषी है। आपको इस वर्ण की नीयत से सावधान रहना चाहिए। बहुजन समजा पार्टी में भी घुस गया है।

उत्तर – आपका चौदह जनवरी का पत्र हमारे कार्यालय में नहीं मिलने के कारण विचार मंथन से अछूता रहा। आपने सवर्णो, विशेषकर ब्राम्हणों के विषय में सतर्क किया। मेरी मान्यता इस संबंध में यह रही है कि अधिकार प्राप्त वर्गो का अधिकार विहीन वर्गो पर किसी न किसी तरीके से अपनी वरीयता बनाये रखने का प्रयत्न लम्बे समय से जारी हैं स्वतंत्रता के पूर्व मनुवादियों ने वर्ण व्यवस्था को जन्म से घोषित करके उसका भरपूर लाभ उठाया। ऐसे प्रयत्नों के विरूद्ध आवाज उठाने का परिणाम मैं भ्भुगत चुका हूँ जब ऐसे मनुवादियों के अत्याचारों के विरूद्ध मैं ईसाई बन रहा था। कुछ समय बाद ही नगरपालिका के चुनाव में मुझे दो तिहाई बहुमत से नगरपालिका अध्यक्ष चुन लिया गया और इस चुनाव में शहर के अधिकांश मनुवादियों का गुप्त समर्थन मुझे मिला। मैं प्रत्यक्ष विरोध और अप्रत्यक्ष समर्थन के बाद जिस निष्कर्ष पर पहुँचा वह ऐसा था कि न तो किसी जाति विशेष के सब लोग अत्याचारी हैं और न अत्याचार विरोधी।

आज मैं देख रहा हूँ कि जन्मना जाति व्यवस्था को आधार बनाकर मनुवादियों ने जो खेल खेला था ठीक वही खेल उसी तरीके से मनुवाद विरोधियों के द्वारा भी खेला जा रहा है । ये लोग भी येन–केन–प्रकारेण जन्मना जाति व्यवस्था को मजबूत से मजबूत बनाये रखना चाहते हैं। ये लोग भी अधिकार विहीन लोगों की चिन्ता छोड़कर स्वयं को मजबूत करने का प्रयत्न करते रहते हैं और यदि मेरे जैसा कोई व्यक्ति ऐसे प्रयत्नों के विरूद्ध

आवाज उठाता है तो उसे संघ के साथ जोड़ दिया जाता है चाहे दूर–दूर तक संघ से संबंध न भी हो।

मैं धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्रीयता, उम्र, लिंग, गरीब–अमीर, उत्पादक उपभोक्ता के आठ आधारों पर वर्ग निर्माण , वर्ग विद्वेष और वर्ग संघर्ष को हवा देने के प्रयत्नों के विरूद्ध हूँ चाहे ये प्रयत्न मनुवादियों द्वारा किये गये थें या अम्बेडकर वादियों द्वारा किये जा रहे हैं। मैं आश्वस्त हूं कि भारत की राजनीति इन आठों आधारों पर सत्ता संघर्ष में लिप्त है और यदि जरूरी हो तो राजनैतिक लाभ के लिए ये मनुवादी और अम्बेडकर वादी हाथ मिलाकर भी खेल खेलने से परहेज नहीं करेंगे। यह सत्ता का चरित्र ही होता है किसी व्यक्ति का दोष नहीं। जब भी किसी वर्ग विशेष के कुछ लोग अपने संकुचित स्वार्थ के लिए वर्ग संघर्ष की आवाज उठाते हैं और उस आवाज को वर्ग स्वीकृति मिलने लगती है तब उसका प्रभाव वर्ग चरित्र पर पड़ना निश्चित है। यह प्रभाव विनाशकारी रूप ग्रहण करता है क्योंकि उसका लाभ उठा रहा छोटा सा ग्रुप उस वर्ग निर्माण को स्थायित्व देने का प्रयास करता रहता है। मनुवादियों के एक छोटे से समूह ने ही अपने निहित स्वार्थ के लिए अवर्णो के विरूद्ध जन्मना जाति व्यवस्था को सवर्णो के सस्कार के रूप में बदल दिया । यह बहुमत सवर्णो की सोच नहीं है , बल्कि संस्कार है जो आसानी से दूर नहीं होता। मैं स्वयं इस बात का आज तक अनुभव करता हूँ। यदि मेरे साथ काम करने वाला कोई अछूत भी साथ रहे और जीवन भर भी रहे तो मैं उसकी जाति धर्म जानने का प्रयत्न नहीं करता न ही मेरे मन में कोई भिन्न भाव पैदा होता है। किन्तु किसी कारणवश यह पता चले या बताया जावे कि मेरे साथ काम कर रहा व्यक्ति अछूत है तो आज भी उसके प्रति मेरे पुराने संस्कार जग जाते हैं और उसके प्रति सामान्य समानता के व्यवहार की अपेक्षा विशेष प्रयत्नपूर्वक समानता का व्यवहार करना पड़ता है। मेरी इतनी उम्र भी है और विचारधारा भी पूरी तरह आर्य समाज की है। फिर भी संस्कार

धीरे–धीरे बदल रहे हैं । जो लोग पहले अपने स्वार्थ के लिए अछूतों या अवर्णो की पहचान आवश्यक मानकर उसे जिन्दा रखते थे उसी तरीके से आज का अवर्णो का छोटा सा वर्ग भी अपनी पहचान बनाये रखने का लगातार प्रयत्न कर रहा है जो घातक है। आरक्षण का लाभ जिस पांच सात प्रतिशत समूह को मिला है उसी के परिवारों को आगे भी मिलता रहेगा और धीरे–धीरे अवर्णो के मन में कोई स्थायी शोषण प्रवृत्ति बन सकती है। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि जाति व्यवस्था के जन्मना स्वरूप को नकार दिया जाए और उसका लाभ अवर्णो के एक छोटे से समूह को न मिलकर सम्पूर्ण अछूत या शूद्र वर्ग को मिले। मेरे विचार में श्रम को अधिक लाभदायक स्वरूप में उठाकर ही यह काम संभव है कि सांप भी मर जावे और लाठी भी न टूटे। वर्तमान मनुवादी व्यवस्था में संशोधन करके एक विकल्प पर विचार करने की आवश्यकता है। बिना विकल्प पर विचार किये व्यवस्था को तोड़ना उचित नहीं है। अम्बेडकर वादियों के मन में यदि कोई ऐसी सोच विकसित हो रही हो कि हजारों वर्षो तक कुछ लोगों ने मनुवाद के नाम पर अत्याचार किया है, अब हम अम्बेडकर वाद के नाम पर करेंगे तो यह सभव तो है पर उचित नहीं ।इस तरीके से तो पहले भी अत्याचार करने वाले मजबूत थे और आज भी वैसी प्रवृत्ति के ही लोग रहेंगे। भले ही नाम चेहरे या आदर्श बदल जावें। अत्याचार और शोषण के शिकार तो शरीफ लोग होंगे ही।

मैं फिर से निवेदन करू कि वर्ग संघर्ष की आवाज की शुरूआत तो अन्याय के विरूद्ध संगठित होने से होती है किन्तु जल्दी ही वह आवाज अन्याय करने में बदल जाती है क्योंकि वह आवाज संघर्ष करने वालों के छोटे से समूह के स्वार्थ में बदल जाती है जिसे अन्य लोग समझ ही नहीं पाते। मुझे उम्मीद है कि आप इस संबंध में गंभीरता पूर्वक सोचेंगे और आगे कुछ समाधान बताने का प्रयत्न करेंगे।

आपने संघ की सोच के विषय में एक पत्रक भेजा है। मैंने पत्रक को छापना उचित नहीं समझा क्योंकि पत्रक संघ का ही है ऐसा न तो पत्रक से

सिद्ध होता है न उसकी भाषा से। पत्रक के कमांक चार मे लिखा गया है कि संघ ने अपने कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया है कि ''डा0 और दवा विकेताओं में हिन्दुत्व की भावना जगायी जावे जिससे व अपनी काल बीती हानिकारक और फालतू दवाएँ ही अनुसूचित जाति, जनजाति , पिछड़े और मुसलमान ग्राहकों को बेंचे'' मेरी व्यक्तिगत जानकारी और सोच के अनुसार ऐसा निर्देश असंभव है। फिर भी यदि आप या कोई सज्जन सच होने या प्रमाण या दावा करे तो मैं उसके दावे और संघ के खण्डन के बीच सत्य की खोज में अपना समय और शक्ति लगाने के लिए तैयार हूँ। जिससे कम से कम मैं यह तो कहने की स्थिति में रहूँ कि संघ और अम्बडेकर वादियों में से कौन कितना षडयंत्र कर रहा है। मुझे उम्मीद है कि इस सत्यशोध में आपकी सहायता मिलेगी।

(ज) श्री भंवर लाल झंवर, 63 रावजी का हाता, उदयपुर, राजस्थान।

आचार्य पंकज जी ने ज्ञान तत्व एक सौ उन्चालीस में बहुत स्पष्ट और तर्कसंगत तरीके से विचार प्रस्तुत किये हैं। वास्तव में आज के राजनैतिक दल कुर्सी मात्र के लिए ही समाज को वर्गो में बांटकर वर्ग संघर्ष को बढ़ावा दे रहे हैं। ये लोग अंग्रेजों के समान ही **Devide and rule** की लीक पर लगातार चलते जा रहे हैं। ये लोग गांधी जी की जय बोलते हैं किन्तु इनका सम्पूर्ण आचरण गांधी जी के विपरीत होता है।

पंकज जी के विचारों के उत्तर में मोहम्मद शफी भाई ने भी स्पष्ट और सही बातें लिखी। सच्चाई ही है कि आज जैसी खराब हालत तो न मुस्लिम शासन काल में थी न अंग्रेजों के समय में। अपराधों में तो आगे भी वृद्धि के ही लक्षण दिख रहे हैं। पंकज जी ने अंक एक सौ सैंतालिस में फिर से अपने

चिन्तन को विस्तार दिया है। मैं तो पूरे विचार मंथन से बहुत प्रभावित हूँ। आचार्य पंकज जी और मोहम्मद शफी भाई को ज्ञान तत्व के माध्यम से मेरा धन्यवाद पहुँचाने की कृपा करें।

आप भी जो कुछ लिखते हैं वह बहुत प्रभावकारी होता है। मेरे कई साथी पढ़तें हैं। हमें महसूस होता है कि भारतीय संविधान की रचना में उस समय यदि आप जैसे सौ समाजशास्त्री भी बैठ गये होते तो न देश का कबाड़ा हुआ होता न ही समाज का। लोकतंत्र के स्थान पर ऐसा लोक स्वराज्य होता जो पूरे विश्व का मार्गदर्शन करता। अब भी समय है कि हम सब मिल जुलकर आप सब के मार्गदर्शन में अपनी पिछली भूलों का परिमार्जन करें।

उत्तर – परिस्थितियॉ बहुत विकट हैं। किन्तु निराशा से समाधान नहीं होगा । हमें अब समाधान के लिए बड़े–बड़े उपाय करने की अपेक्षा छोटे–छोटे उपाय करने होंगे। इन छोटे उपायों में ज्ञान यज्ञ बहुत प्रभावकारी है। माह में एक बार किसी निश्चित दिन या तारीख को निश्चित समय पर कुछ लोग स्थानीय स्तर पर भी सामाजिक विषयों पर स्वतंत्र विचार मंथन शुरू कर दे तो बहुत प्रभाव होगा। देशभर में कहीं –कहीं प्रारम्भ तो हो। कुछ लोग अकेले भी बैठना शुरू करें तो टीम धीरे–धीरे बन जायेगी। इस प्रयास का विस्तृत स्वरूप ही ग्रामसभा के रूप में बढ़ सकता है। यदि कुछ लोग शुरू करना चाहें तो हमसे संपर्क करें। रामानुजगंज शहर में इस प्रयत्न से बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त हो चुके हैं। वह पहला प्रयत्न होने से परिणाम प्राप्त करने में कई वर्ष लगे किन्तु अब तो राह साफ दिख रही हैं। माह में एक दिन एक दो निश्चित स्थान पर बैठने का संकल्प लीजिए। संकल्प पत्र भरकर ज्ञान यज्ञ परिवार की श्रृंखला से जुड़ जाइये। तीन वर्षो में चमत्कारिक लाभ

होना निश्चित है। आप चाहें तो पत्र लिखकर सदस्यता या संकल्प पत्र की प्रति मंगा सकते है।